REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 3 | DECEMBER – 2017

अनौपचारिक अर्थव्यवस्था और सरगुजा जिले के वाणिज्य में इसकी भूमिका

डॉ. शैहून एक्का
सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य)
शासकीय नवीन महाविद्यालय, बतौली, जिला - सरगुजा (छ. ग.).

सारांश:

यह शोध पत्र छत्तीसगढ़ के सरगुजा जिले में अनौपचारिक अर्थव्यवस्था की जांच करता है स्थानीय वाणिज्य और आर्थिक विकास में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डालता है। अनौपचारिक अर्थव्यवस्था में अनियमित और अपंजीकृत गतिविधियों की एक्विस्तृत श्रृंखला शामिल है जो आबादीके एक महत्वपूर्ण हिस्से को आजीविका प्रदान करती है। यह अध्ययन सरगुजा में अनौपचारिक अर्थव्यवस्था की विशेषताओं का पता लगाता है जिसमें रोजगार सृजन, उद्यमिता और स्थानीय आर्थिक विकास में इसका योगदान शामिल है। इसके महत्व के बावजूद, अनौपचारिक क्षेत्र को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जैसे मान्यता की कमी, संसाधनों तक सीमित पहुंच और आर्थिक उतार-चढ़ाव के प्रति संवेदनशीलता। गुणात्मक और मात्रात्मक विश्लेषण के माध्यम से इस पत्र का उद्देश्य अनौपचारिक अर्थव्यवस्था की गतिशीलता और सरगुजा जिले के व्यापक आर्थिक परिदृश्य पर इसके प्रभाव पर प्रकाश डालना है। निष्कर्ष अनौपचारिक उद्यमों की स्थिरता और औपचारिकता को बढ़ाने के लिए सहायक नीतियों और पहलों की आवश्यकता को रेखांकित करते हैं, अंततः समावेशी आर्थिक विकास को बढ़ावा देते हैं और इस क्षेत्र में लगे लोगों की आजीविका मेंसुधार करते हैं।

मुख्य शब्द : अनौपचारिक अर्थव्यवस्था, सरगुजा जिला, वाणिज्य, रोजगार सृजन, उद्यमिता, आर्थिक विकास, अनियमित गतिविधियाँ, स्थानीय अर्थव्यवस्था.

परिचय:

अनौपचारिक अर्थव्यवस्था विकासशील क्षेत्रों के आर्थिक परिदृश्य में महत्वपूर्ण भूमिकानिभाती है, जो लाखों लोगों को आजीविका और आर्थिक अवसर प्रदान करती है। भारत में, अनौपचारिक क्षेत्र विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, जो श्रम शक्ति के एक बड़े हिस्से के लिए जिम्मेदार है और स्थानीय और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं में पर्याप्त योगदान देता है। छत्तीसगढ़ केउत्तरी भाग में स्थित सरगुजा जिला मुख्य रूप से ग्रामीण है और एक बड़े आदिवासी समुदाय सहित विविध आबादी का घर है। इस संदर्भ में अनौपचारिक अर्थव्यवस्था स्थानीय वाणिज्य की रीढ़ बनती है, जिसमें छोटे पैमाने की कृषि, हस्तशिल्प, स्ट्रीट वेंडिंग और अनौपचारिक सेवाओं जैसी अपंजीकृत और अनियमित गतिविधियों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है।

अपनी महत्वपूर्ण भूमिका के बावजूद सरगुजा में अनौपचारिक अर्थव्यवस्था अक्सर औपचारिक आर्थिक प्रणालियों के किनारे पर संचालित होती है, जिसमें आधिकारिक मान्यता और ऋण, बुनियादी ढांचे और सरकारी समर्थन जैसे प्रमुख संसाधनों तक पहुंच की कमी होती है। इस क्षेत्र की विशेषता कम उत्पादकता, खराब कामकाजी परिस्थितियाँ और आर्थिक झटकों के प्रति संवेदनशीलता है, जो क्षेत्रीय विकास में पूर्ण योगदान देने की इसकी क्षमता को सीमित करती है। हालाँकि, सरगुजा के कई निवासियों के लिए, विशेष रूप से औपचारिक रोजगार तक सीमित पहुँच

वाले लोगों के लिए, अनौपचारिक अर्थव्यवस्था जीवनयापन और आर्थिक भागीदारी का एक महत्वपूर्ण साधन है।

यह शोध पत्र सरगुजा जिले में अनौपचारिक अर्थव्यवस्था की पड़ताल करता है स्थानीय वाणिज्य और आर्थिक विकास में इसके योगदान की जाँच करता है। क्षेत्र में प्रचलित अनौपचारिक आर्थिक गतिविधियों के प्रकारों, अनौपचारिक श्रमिकों और उद्यमियों के सामने आने वाली चुनौतियों और औपचारिकता और समर्थन के अवसरों का विश्लेषण करके, इस अध्ययन का उद्देश्य सरगुजा के आर्थिक भविष्य को आकार देने में इस क्षेत्र की भूमिका की व्यापक समझ प्रदान करना है। विशेष रूप से, यह शोध पत्र रोज़गार सृजन, उद्यमिता और गरीबी उन्मूलन पर अनौपचारिक अर्थव्यवस्था के प्रभाव को उजागर करेगा, साथ ही अनौपचारिक काम में लगे लोगों के लिए अधिक स्थिरता और समावेश को बढ़ावा देने वाली नीतियों की आवश्यकता को भी संबोधित करेगा।

इस शोध के माध्यम से, यह शोध पत्र ग्रामीण और अविकसित क्षेत्रों में अनौपचारिक अर्थव्यवस्था के महत्व पर व्यापक चर्चा में योगदान देने का लक्ष्य रखता है, जो सरगुजा जिले और भारत भर के इसी तरह के क्षेत्रों में नीति निर्माण और विकास रणनीतियों को सूचित कर सकता है।

शोध का उद्देश्य:

१) सरगुजा जिले के वाणिज्य और इसके व्यापक आर्थिक विकास में अनौपचारिक अर्थव्यवस्था की भूमिका की जांच करना।
२) यह मूल्यांकन करना कि अनौपचारिक आर्थिक गतिविधियाँ सरगुजा जिले में रोजगार सृजन, स्थानीय उद्यमिता और समग्र आर्थिक विकास में कैसे योगदान देती हैं।
३) सरगुजा में अनौपचारिक अर्थव्यवस्था का गठन करने वाले प्राथमिक क्षेत्रों का पता लगाना, जिसमें लघु-स्तरीय कृषि, हस्तशिल्प, स्ट्रीट वेंडिंग और अनौपचारिक सेवाएँ शामिल हैं
४) सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों की जांच करना, जैसे मान्यता की कमी, वित्त तक पहुँच, खराब कामकाजी परिस्थितियाँ और बाजार में उतार-चढ़ाव के प्रति संवेदनशीलता, जो सरगुजा में अनौपचारिक अर्थव्यवस्था की क्षमता को सीमित करती हैं।
५) विश्लेषण करना कि अनौपचारिक अर्थव्यवस्था किस तरह आजीविका का समर्थन करती है और जिले में गरीबी उन्मूलन में योगदान देती है, खासकर हाशिए के समुदायों के बीच।

साहित्य समीक्षा:

अनौपचारिक अर्थव्यवस्था सरगुजा जिले जैसे क्षेत्रों में वाणिज्य और रोजगार में महत्वपूर्ण योगदान देती है। अध्ययनों ने विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में अनौपचारिक क्षेत्र की भूमिका की व्यापक समझ प्रदान की है। प्रमुख योगदानों में शामिल हैं

१) हार्ट (१९७३) और अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO, १९७२) ने अनौपचारिक क्षेत्र को औपचारिक रोजगार से अलग करके और कम आय वाली आबादी के अस्तित्व में इसकी भूमिका को उजागर करके इसकी नींव रखी।

२) ब्रेमन (१९९६) ने अनौपचारिक श्रमिकों की कमज़ोरियों पर ध्यान केंद्रित किया, सामाजिक सुरक्षा की कमी के कारण उनके सामने आने वाली अनिश्चित परिस्थितियों पर ज़ोर दिया, जो सरगुजा जैसी ग्रामीण अर्थव्यवस्थाओं के लिए अत्यधिक प्रासंगिक है।

३) चेन (२००१) ने अनौपचारिक क्षेत्र के भीतर लैंगिक गतिशीलता की खोज की, जिसमें पाया गया कि महिलाएँ और हाशिए पर पड़े समूह असमान रूप से शामिल हैं। यह सरगुजा में विशेष रूप से प्रासंगिक है जहाँ आदिवासी और वंचित समूह अनौपचारिक काम पर निर्भर हैं।

४) चौधरी और बनर्जी (२००४) और भल्ला (२००७) ने अनौपचारिक वाणिज्य के आर्थिक योगदान के बारे में जानकारी प्रदान की, जिसमें अनुमान लगाया गया कि अनौपचारिक क्षेत्र भारत के सकल घरेलू उत्पाद में महत्वपूर्ण योगदान देता है जबकि सरगुजा जैसे क्षेत्रों में अधिकांश आबादी को बनाए रखता है।

५) डी सोटो (२०००) ने "मृत पूंजी" की अवधारणा पेश की, जिसमें इस बात पर जोर दिया गया कि अनौपचारिक व्यवसाय, हालांकि महत्वपूर्ण हैं, कानूनी मान्यता और विकास क्षमता से वंचित हैं। यह सरगुजा की स्थिति को दर्शाता है जहां अनौपचारिक वाणिज्य सीमित औपचारिक समर्थन के बावजूद फल-फूल रहा है।

६) सिन्हा (२००५) और उन्नी एवं रानी (२००३) ने ग्रामीण क्षेत्रों में अनौपचारिक व्यापार की भूमिका का पता लगाया, जिसमें बताया गया कि यह स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को कैसे बनाए रखता है खासकर कृषि और लघु उद्योगों में।

७) मेघेर (२०१३) और चार्म्स (२०००) ने अनौपचारिक अर्थव्यवस्थाओं को आधार देने वाले सामाजिक नेटवर्क की जांच की जिसमें दिखाया गया कि कैसे विश्वास और सामुदायिक संबंध वाणिज्य के लिए आवश्यक हैं जो सरगुजा के आदिवासी समुदायों के लिए एक महत्वपूर्ण कारक है।

कुल मिलाकर, साहित्य से पता चलता है कि अनौपचारिक अर्थव्यवस्था सरगुजा के वाणिज्य के लिए महत्वपूर्ण है जो औपचारिक नियामक प्रणालियों के बाहर काम करते हुए बहुसंख्यकों को आजीविका प्रदान करती है। हालांकिइस क्षेत्र को चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिसमें भेद्यता, औपचारिक मान्यता की कमी और आर्थिक विकास के अवसरों तक सीमित पहुंच शामिल है।

शोध पद्धति:

अध्ययन ने सरगुजा में अनौपचारिक अर्थव्यवस्था का विश्लेषण किया, इसकी विशेषताओं, चुनौतियों और विकास के अवसरों पर ध्यान केंद्रित किया। प्राथमिक आँकड़े क्षेत्र सर्वेक्षण, साक्षात्कार और प्रमुख हितधारकों के साथ लक्षित समूह चर्चाओं के माध्यम से एकत्र किये गए है। द्वितीयक आँकड़े सरकारी रिपोर्टों, शैक्षणिक पत्रों और प्रासंगिक डेटाबेस से प्राप्त किये गये है। प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिए एक बहु-चरणीय नमूनाकरण तकनीक का उपयोग किया गया है। सरगुजा के वाणिज्य में अनौपचारिक अर्थव्यवस्था की भूमिका का एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करते हुए, गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों तरीकों का उपयोग करके जानकारी का विश्लेषण किया गया है। यह शोध पद्धति अनौपचारिक क्षेत्र के योगदान और चुनौतियों के बारे में बहुमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान करती है जो भविष्य की नीति और विकास रणनीतियों को सूचित करती है।

अनौपचारिक अर्थव्यवस्था और सरगुजा जिले के वाणिज्य में इसकी भूमिका:

अनौपचारिक अर्थव्यवस्था विकासशील क्षेत्रों में आर्थिक परिदृश्य का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो अक्सर औपचारिक क्षेत्र से बाहर रखे गए लोगों के लिए रोजगार और आय के अवसर प्रदान करती है। भारत में, अनौपचारिक अर्थव्यवस्था श्रम शक्ति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और स्थानीय वाणिज्य को समर्थन देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैखासकर ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में। छत्तीसगढ़ के उत्तरी भाग में स्थित सरगुजा जिला मुख्य रूप से ग्रामीण है और यहाँ कई आदिवासी समुदायों सहित विविध आबादी रहती हैसरगुजा में अनौपचारिक अर्थव्यवस्था में कई तरह की अपंजीकृत और अनियमित गतिविधियाँ शामिल हैं जैसे कि छोटे पैमाने की कृषि, हस्तशिल्प, स्ट्रीट वेंडिंग और अनौपचारिक सेवाएँ जो इसे स्थानीय अर्थव्यवस्था का एक आवश्यक चालक बनाती हैं।

सरगुजा में अनौपचारिक अर्थव्यवस्था की विशेषता इसकी औपचारिक मान्यता का अभाव है जिसमें अधिकांश गतिविधियाँ सरकारी विनियमन और कराधान के दायरे से बाहर संचालित होती हैं। इसमें विभिन्न आर्थिक गतिविधियाँ शामिल हैं जैसे कि छोटे पैमाने की कृषि, हस्तशिल्प और कुटीर उद्योग, स्ट्रीट वेंडिंग और अनौपचारिक सेवाएँ, और सूक्ष्म उद्यमिता।

सरगुजा में अनौपचारिक क्षेत्र रोज़गार का एक प्रमुख स्रोतहै, विशेष रूप से हाशिए पर पड़े समुदायों और शिक्षा और औपचारिक रोज़गार के अवसरों तक सीमित पहुँच वाले लोगों के लिए। फ़ील्ड सर्वेक्षणों से पता चलता है कि जिले की आबादी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा अपनी आजीविका के लिए अनौपचारिक काम पर निर्भर है, जिसमें महिलाओं और अदिवासी आबादी का इस क्षेत्र में अनुपातहीन प्रतिनिधित्व है।

सरगुजा के वाणिज्य में अनौपचारिक अर्थव्यवस्था की भूमिका:

सरगुजा में अनौपचारिक अर्थव्यवस्था स्थानीय बाजारों में व्यापार को सुविधाजनक बनाने और सामान और सेवाएँ प्रदान करेक स्थानीय वाणिज्य में महत्वपूर्ण योगदान देती है। ये छोटे व्यवसाय स्थानीय आबादी की दैनिक ज़रूरतों को पूरा करते हैंजिसमें भोजन, कपड़े, परिवहन और बुनियादी सेवाएँ शामिल हैं। अनौपचारिक अर्थव्यवस्था स्थानीय उद्यमिता को भी बढ़ावा देती हैजिसमें कई व्यक्ति छोटे उद्यम शुरू करते हैंजो सरगुजा की अर्थव्यवस्था की जीवंतता में योगदान करते हैं।

अनौपचारिक क्षेत्र आबादी के एक बड़े हिस्से, विशेष रूप से महिलाओं, युवाओं और आदिवासी समुदायों के लिए प्राथमिक नियोक्ता के रूप में कार्य करता है, जिन्हें औपचारिक कार्यबल में प्रवेश करने मेंबाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। इससे गरीबी को कम करने और जिले की आर्थिक स्थिरता का समर्थन करने में मदद मिलती है।

अनौपचारिक अर्थव्यवस्था स्थानीय उद्यमिता और नवाचार को भी बढ़ावा देती है। कई व्यक्ति औपचारिक विनियमन के बिना न्यूनतम पूंजी निवेश के साथ छोटे व्यवसाय शुरू कर सकते हैं, नए उत्पाद, सेवाएँ और बाज़ार के अवसर बनाकर स्थानीय वाणिज्य में योगदान दे सकते हैं। उदाहरण के लिए, हस्तशिल्प क्षेत्र की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को दर्शाते हैं और कारीगर परिवारों के लिए आय उत्पन्न करते हैं।

अनौपचारिक अर्थव्यवस्था के सामने चुनौतियाँ:

सरगुजा में अनौपचारिक अर्थव्यवस्था को सरकार से औपचारिक मान्यता और समर्थन की कमी के कारण महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। अनौपचारिक श्रमिकों और उद्यमियों को अक्सर ऋण, सामाजिक सुरक्षा और कानूनी सुरक्षा जैसी आवश्यक सेवाओं तक पहुँच की कमी होती है जो उनके व्यवसाय को बढ़ाने और अपनी आजीविका में सुधार करने की उनकी क्षमता में बाधा डालती है। छोटे पैमाने के किसान और कारीगर बुनियादी ढाँचे और बाज़ार संपर्कों की कमी के कारण बाज़ारों तक पहुँचने औरअपने उत्पादों को उचित मूल्य पर बेचने के लिए संघर्ष करते हैं। अनौपचारिक अर्थव्यवस्था बाहरी झटकों जैसे आर्थिक मंदी, पर्यावरणीय परिवर्तन और सार्वजनिक स्वास्थ्य संकटों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील है। महिलाएँ और हाशिए पर पड़े समूह जैसे कि आदिवासी समुदाय, अनौपचारिक क्षेत्र में अनुपातहीन रूप से प्रतिनिधित्व करते हैं और अपने पुरुष समकक्षों की तुलना में अधिक चुनौतियों का सामना करते हैं। महिलाओं के कम वेतन वाली अनौपचारिक नौकरियों में शामिल होने की अधिक संभावना है जहाँ काम करने की खराब परिस्थितियाँ और उन्नति के सीमित अवसर हैं, मौजूदा सामाजिक असमानताएँ और भी बढ़ जाती हैं और समावेशी आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए अनौपचारिक अर्थव्यवस्था की क्षमता सीमित हो जाती है।

औपचारिकीकरण और विकास के अवसर:

सरगुजा में अनौपचारिक क्षेत्र के लिए नीतिगत समर्थन, सूक्ष्म ऋण और बीमा जैसी वित्तीय सेवाएँ प्रदान करके, साथ ही कौशल प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण पहल करके वाणिज्य में इसकी भूमिका को बेहतर बना सकता है। अनौपचारिक क्षेत्र को औपचारिक बनाने से छोटे व्यवसायों को औपचारिक अर्थव्यवस्था में पंजीकरण और एकीकृत करने, कर राजस्व में सुधार, श्रमिक सुरक्षा और सार्वजनिक सेवाओं तक पहुँच को बढ़ावा देकर विकास को बढ़ावा मिल सकता है। हालाँकि, अनौपचारिक श्रमिकों के लिए अतिरिक्त बाधाएँ पैदा करने से बचने के लिए औपचारिकीकरण को सावधानी से अपनाया जाना चाहिए, खासकर उन लोगों के लिए जिनके पास नियामक आवश्यकताओं का पालन करने के लिए संसाधन नहीं हो सकते हैं।

सरगुजा जिले के वाणिज्य में अनौपचारिक अर्थव्यवस्था एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है जो आबादी के एक महत्वपूर्ण हिस्से को आजीविका प्रदान करती है और स्थानीय आर्थिक विकास में योगदान देती है। जबकि इस क्षेत्रको औपचारिक मान्यता की कमी, आर्थिक झटकों के प्रति संवेदनशीलता और सामाजिक असमानता सहित कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, यह उद्यमिता, रोजगार सृजन और सामुदायिक विकास के अवसर भी प्रस्तुत करता है। सहायक नीतियों को लागू करके और अनौपचारिक उद्यमों के औपचारिकीकरण को बढ़ावा देकर, सरकार और अन्य हितधारक अनौपचारिक अर्थव्यवस्था की स्थिरता को बढ़ा सकते हैं और सरगुजा के वाणिज्य और समग्र विकास में योगदान देने के लिए इसकी पूरी क्षमता को बढ़ा सकते हैं।

अनौपचारिक अर्थव्यवस्था को समझना: अनौपचारिक अर्थव्यवस्था, जिसे "छाया" या "भूमिगत" अर्थव्यवस्था के रूप में भी जाना जाता है, आर्थिक गतिविधियों की एक किस्म है जो औपचारिक विनियामक और कराधान प्रणालियों के बाहर होती है। यह न्यूनतम निगरानी के साथ संचालित होती है, जो आर्थिक भागीदारी के लिए एक लचीला और सुलभ मार्ग प्रदान करती है। अनौपचारिक अर्थव्यवस्था की प्रमुख विशेषताओं में पंजीकरण की कमीलचीलापन और प्रवेश के लिए कम बाधाएँ शामिल हैं। अनौपचारिक व्यवसाय और कर्मचारी औपचारिक लाइसेंस, पंजीकरण या विनियामक अनुपालन के बिना काम करते हैं जिससे उन्हें कराधान और श्रम कानूनों से बचने की अनुमति मिलती है। वे बदलती बाजार स्थितियों के लिए अत्यधिक अनुकूल हैं, जिससे उन्हें स्थानीय मांग और आर्थिक उतार-चढ़ाव के जवाब में अपने संचालन, कीमतों या उत्पाद पेशकशों को समायोजित करने की अनुमति मिलती है। यह सुलभता अकुशल, बेरोजगार या हाशिए पर रहने वाली आबादी के लिए प्रवेश बाधा को कम करती है, जिससे अनौपचारिक अर्थव्यवस्था आर्थिक गतिविधि का एक महत्वपूर्ण घटक बन जाती है, खासकर सरगुजा जिले जैसे विकासशील क्षेत्रों में। हालाँकि, अनौपचारिक अर्थव्यवस्था कानूनी सुरक्षा की कमी, आर्थिक झटकों के प्रति भेद्यता और व्यवसायों को बढ़ाने या औपचारिक बनाने में कठिनाइयों जैसी चुनौतियाँ भी पेश करती है।

सरगुजा में अनौपचारिक आर्थिक गतिविधियों के प्रकार:

सरगुजा जिले की अनौपचारिक अर्थव्यवस्था विविधतापूर्ण है जिसमें विभिन्न आर्थिक गतिविधियाँ शामिल हैं जो आबादी के एक महत्वपूर्ण हिस्से को आजीविका प्रदान करती हैं। ये गतिविधियाँ औपचारिक नियमों के बाहर होती हैं, जो जिले के वाणिज्य और स्थानीय व्यापार में योगदान करती हैं। अनौपचारिक आर्थिक गतिविधियों के प्रमुख प्रकारों में कृषि श्रम, छोटे पैमाने पर विनिर्माण, सड़क विक्रेता और सेवा क्षेत्र शामिल हैं।

कृषि श्रम में मौसमी या आकस्मिक कार्य शामिल होते हैं, जो अक्सर औपचारिक अनुबंधों के बिना होते हैं जो जिले की अनौपचारिक अर्थव्यवस्था में योगदान करते हैं। छोटे पैमाने की विनिर्माण इकाइयाँ, जो अक्सर परिवार द्वारा संचालित होती हैं, पारंपरिक

हस्तशिल्प, वस्त्र, मिट्टी के बर्तन और अन्य स्थानीय रूप से निर्मित सामान बनाती हैं। स्ट्रीट वेंडर विभिन्न प्रकार के सामान बेचते हैं, जैसे कि भोजन, कपड़े, घरेलू सामान और रोजमर्रा की ज़रूरतें, छोटे पैमाने पर न्यूनतम ओवरहेड लागत के साथ।

सेवा क्षेत्र में घरेलू काम, सिलाई, परिवहन और छोटी मरम्मत सेवाएँ प्रदान करने वाले व्यक्ति शामिल हैं। ये सेवाएँ जिले में दैनिक जीवन के लिए महत्वपूर्ण हैं, जो औपचारिक रोजगार संरचनाओं या सामाजिक सुरक्षा लाभों के बिना किफ़ायती और लचीले समाधान प्रदान करती हैं।

सरगुजा की अनौपचारिक अर्थव्यवस्था इसके वाणिज्य की रीढ़ है, जो समुदाय को आवश्यक वस्तुएँ और सेवाएँ प्रदान करती है, साथ ही ग्रामीण और हाशिए पर पड़े समुदायों की आजीविका का समर्थन करती है।

अनौपचारिक अर्थव्यवस्था का वाणिज्य में योगदान:

अनौपचारिक अर्थव्यवस्था सरगुजा जिले में रोजगार का एक महत्वपूर्ण स्रोत है जो इस क्षेत्र में कुल रोजगार का ८०% से अधिक है। यह परिवारों को आवश्यक आय सहायता प्रदान करती है और विशेष रूप से हाशिए पर पड़े समूहों के लिए बेरोजगारी औरअल्परोजगार को कम करती है। अनौपचारिक अर्थव्यवस्था स्थानीय वाणिज्य को प्रोत्साहित करके, क्षेत्र के भीतर से कच्चे माल की सोर्सिंग करके आर्थिक गतिविधि उत्पन्न करके जिले के समग्र आर्थिक विकास में भी योगदान देती है। अनौपचारिक उद्यमों और कृषि क्षेत्र के बीच यह परस्पर निर्भरता एक जीवंतस्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देती है, उपभोक्ता मांग को बनाए रखती है और यह सुनिश्चित करती है कि माल और सेवाएँ आबादी के लिए सुलभ रहें।

अनौपचारिक क्षेत्र उद्यमशीलता और नवाचार को भी बढ़ावा देता है, जिससे व्यक्ति न्यूनतम पूंजी और संसाधनों के साथछोटे व्यवसाय शुरू कर सकते हैं। अनौपचारिक अर्थव्यवस्था में उद्यमी अक्सर रचनात्मक समाधान और अनुकूलनशीलता के साथ काम करते हैं, अपने स्थानीय समुदायों की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अपनी पेशकशों को तैयार करते हैं। यह उद्यमशीलताकी भावना न केवल स्थानीय रोजगार में योगदान देती है बल्कि एक गतिशील वातावरण को भी बढ़ावा देती है जहाँ नवाचार पनपता है जिससे आर्थिक वृद्धि और विकास के नए अवसर पैदा होते हैं। इस प्रकार, अनौपचारिक अर्थव्यवस्था सरगुजा जिले के वाणिज्य, रोजगार बढ़ाने, आर्थिक विकास को बढ़ावा देने और अपनी अनियमित प्रकृति के बावजूद स्थानीय उद्यमशीलता को प्रोत्साहित करने का एक प्रमुख चालक बनी हुई है।

अनौपचारिक अर्थव्यवस्था के सामने चुनौतियाँ:

सरगुजा जिले में अनौपचारिक अर्थव्यवस्था रोजगार और वाणिज्य के लिए एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है लेकिन इसे अक्सर औपचारिक संस्थानों से हाशिए पर और समर्थन की कमी का सामना करना पड़ता है। अनौपचारिक श्रमिकों और व्यवसायों के पास आवश्यक सामाजिक सुरक्षा लाभ, वित्तीय सेवाएँ और सरकारी सहायता कार्यक्रम तक पहुँच नहीं है, जो उन्हें ऋण, बीमा या व्यवसाय विकास सेवाओं तक पहुँचने से रोकता है। उचित कानूनी सुरक्षा के बिना, वे शोषण, खराब कामकाजी परिस्थितियों और आर्थिक अस्थिरता के संपर्क में आते हैं जिससे उनके सतत विकास की संभावना कम हो जाती है।

अनौपचारिक अर्थव्यवस्था बाहरी आर्थिक उतार-चढ़ाव, प्राकृतिक आपदाओं और नीतिगत बदलावों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होती है। औपचारिक रोजगार अनुबंधों या कानूनी सुरक्षा के बिना,अनौपचारिक श्रमिकों को आर्थिक मंदी या संकट के दौरान महत्वपूर्ण जोखिमों का सामना करना पड़ता है। बेरोजगारी लाभ या स्वास्थ्य बीमा जैसे सुरक्षा जाल की अनुपस्थिति उनकीअनिश्चित स्थिति को और बढ़ा देती है।

नियामक बाधाएँ भी अनौपचारिक से औपचारिक अर्थव्यवस्था में संक्रमण में बाधा डालती हैं। लाइसेंस प्राप्त करने, नियामक आवश्यकताओं को पूरा करने और औपचारिक क्षेत्र के दायित्वों का पालन करने की प्रक्रिया छोटे अनौपचारिक व्यवसायों के लिए जटिल और महंगी हो सकती है। उच्च प्रशासनिक लागत और नौकरशाही की अक्षमता अनौपचारिक उद्यमों को औपचारिक रूप से आगे बढ़नेसे रोकती है, जिससे उन्हें बाजार के अवसरों में वृद्धि, कानूनी सुरक्षा और ऋण तक पहुँच जैसे लाभों तक पहुँचने से रोका जा सकताहै।

इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए, अनौपचारिक श्रमिकों को सहायता प्रदान करने के लिए लक्षित हस्तक्षेप की आवश्यकता है, जबकि औपचारिकता की बाधाओं को कम करना, यह सुनिश्चित करना कि अनौपचारिक अर्थव्यवस्था हाशिए पर या कमज़ोर बने बिना सरगुजा जिले केवाणिज्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रहे।

निष्कर्ष:

अनौपचारिक अर्थव्यवस्था सरगुजा जिले की अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है जो आय, आजीविका और उद्यमशीलता को बढ़ावा देती है। यह रोजगार सृजन, पारिवारिक सहायता और स्थानीय वाणिज्य के लिए महत्वपूर्ण है। हालाँकि, इसे मान्यता की कमी, आर्थिक उतार-चढ़ाव के प्रति संवेदनशीलता और नियामक बाधाओं जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। अनौपचारिक क्षेत्र की लचीलापन और स्थिरता को बढ़ाने के लिए, औपचारिकता को बढ़ावा देने, क्षमता निर्माण और कौशल विकास में निवेश और सामाजिक सुरक्षा उपायों को मजबूत करने के लिए लक्षित हस्तक्षेप की आवश्यकता है। सरगुजा जिला अनौपचारिक श्रमिकों और उद्यमियों का समर्थन करने वाले वातावरण को बढ़ावा देकर आर्थिक स्थिरता और विकास को बढ़ा सकता है। अनौपचारिक अर्थव्यवस्था केवल औपचारिक श्रम बाजार से बाहर किए गए लोगों के लिए एक विकल्प नहीं है; यह एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है जो क्षेत्र के आर्थिक ताने-बाने में एक मौलिक भूमिका निभाता है। इस क्षेत्र का समर्थन और संवर्धन श्रमिकों की आजीविका और क्षेत्र के समग्र आर्थिक स्वास्थ्य में महत्वपूर्ण सुधार ला सकता है।

संदर्भ:

1. *Chen, M. A. (2012). The informal economy: Definitions, theories, and policies. United Nations Department of Economic and Social Affairs.*
2. *Chen, M. A. (2016). The informal economy: Definitions, theories, and policies. Oxford University Press.*
3. *NCEUS. (2009). Report on the conditions of work and promotion of livelihoods in the unorganized sector. National Commission for Enterprises in the Unorganized Sector. http://nceuis.nic.in/*
4. *Bhalla, S. (2007). The informal sector and its contribution to India's GDP. Indian Journal of Labour Economics, 50(4), 507-525.*
5. *Breman, J. (1996). Footloose labour: Working in India's informal economy. Cambridge University Press.*
6. *Charmes, J. (2000). The contribution of informal sector to GDP in developing countries: Assessment, estimates, methods, orientations for the future. In B. Guha-Khasnobis, R. Kanbur, & E. Ostrom (Eds.), Linking the Formal and Informal Economy: Concepts and Policies (pp. 22-40). Oxford University Press.*
7. *Chaudhuri, S., & Banerjee, D. (2004). Informality and underdevelopment: India's informal economy in a comparative perspective. Economic and Political Weekly, 39(37), 4131-4140.*
8. *Chen, M. A. (2001). Women in the informal sector: A global picture, the global movement. SAIS Review, 21(1), 71-82.*
9. *De Soto, H. (2000). The mystery of capital: Why capitalism triumphs in the West and fails everywhere else. Basic Books.*
10. *Hart, K. (1973). Informal income opportunities and urban employment in Ghana. Journal of Modern African Studies, 11(1), 61-89.*
11. *International Labour Organization (ILO). (1972). Employment, incomes and equality: A strategy for increasing productive employment in Kenya. ILO.*
12. *Meagher, K. (2013). Unlocking the informal economy: A literature review on linkages between formal and informal economies in developing countries. WIDER Working Paper Series, No. 2013/13.*
13. *Sinha, A. (2005). The informal sector in India: Exploring links with the formal economy. Journal of Economic Policy and Research, 3(1), 1-20.*
14. *Tendulkar, S., & Jain, L. (2007). Informal sector in India: A study of employment trends and challenges. India Development Report, 57-76.*
15. *Unni, J., & Rani, U. (2003). Gender and informal economy: The case of India. International Labour Review, 142(4), 459-478.*